उत्तराखंड हिमालय का महाकुंभ : नन्दा राजजात

डॉ. दीपक डोभाल
रूड़की

उत्तराखंड हिमालय का क्षेत्र अनादिकाल से आध्यात्मिक चेतना एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक रहा है। इसी हिमालयी क्षेत्र को देवभूमि, हिमवत् प्रदेश, धरती का स्वर्ग, शिव का निवास स्थान आदि नामों से अभिहित किया जाता है। देवभूमि हिमालय में 'नन्दा देवी राजजात' एशिया महाद्वीप में सबसे लम्बी एवं मध्य हिमालय के बुग्यालों तथा हिमाच्छादित पर्वत शिखरों को चूमने वाली ऐतिहासिक, साहसिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक यात्रा है। यात्रा का आयोजन प्रत्येक बारह वर्ष में किया जाता है। यह यात्रा हिंदू धर्म की अपार आस्था, विश्वास के साथ–साथ गढ़वाल एवं कुमाऊं के जन–जन के हृदय में पली श्रद्धा एवं सांस्कृतिक एकता का परिचायक है। यह नन्दा राजजात लगभग दो सौ अस्सी कि.मी. की लम्बी पद यात्रा जिसका आरंभ नौटी गांव (जिला चमोली) से होकर दुर्गम पहाड़ी मार्गों, घाटियों एवं उच्च हिमालयी शिखरों से अन्तिम पड़ाव होमकुंड़ तक पहुंचती है।

उत्तराखंड के प्राचीन ग्रंथों, ऐतिहासिक साक्ष्यों, पुरावशेषों, वैदिक ऋचाओं, उपनिषदों, पुराणों एवं लोक गाथाओं में देवी नंदा के उच्च आदर्शों का गुणगान किया गया है। उत्तराखंड हिमालय में शक्ति का स्वरूप देवी नंदा को विशिष्ट स्थान दिया गया है। जिसे उत्तराखंडवासी बेटी, बहिन एवं बहू के रूप में पूज्यनीय मानते हैं।

लोकमान्यतानुसार देवी नन्दा राजा दक्षप्रजापति की सात कन्याओं में एक थी। नन्दा देवी का विवाह कैलाश शिखर पर निवास करने वाले 'शिव' या महादेव के साथ होना माना गया है। जहां देवी नन्दा कैलाश शिखर पर 'शिव भगवान्' के साथ रहती है। उत्तराखण्ड की देव स्तुतियों में एवं जागर गीतों में नन्दा के गीत गाए जाते हैं। नन्दा देवी के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। जागर गीतों में नन्दा को नन्द महाराज की पुत्री बतलाया है। जो कि जन्म के समय कंस के क्रूर हाथों से निकलकर आकाश मार्ग से होकर हिमालय की पत्नी मैणा की गोद में पहुंच गयी थी। कुछ लोक कथाओ में तत्कालीन गढ़वाल के चांदपुरीगढ़ी के राजा भानुप्रताप की पुत्री नन्दा को बतलाया गया है। लेकिन अलग–अलग धारणाएं एवं किंवदन्तियां होने के फलस्वरूप भी नन्दा (पार्वती) देवी के रूप में प्रत्येक उत्तराखण्डवासी जनमानस की दृढ़ आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है। इसी परम्परा को संजोएं हुए प्रत्येक बारह वर्ष में ''नन्दा राजजात'' का आयोजन किया जाता है। बीसवीं सदी के अभिलेखों के अनुसार वर्ष 1905 में पहली राजजात, 1925 में दूसरी, 1951 मे तीसरी, 1968 में चौथी, 1987 में पांचवीं तथा वर्ष 2000 में छठवीं राजजात का आयोजन किया गया। अब वर्ष 2014 में इस विशाल भव्य यात्रा का आयोजन सुनिश्चित हुआ है – ई.टी. एटकिंसन ने भी अपनी पुस्तक 'हिमालयन गजेटियर' में प्रत्येक बारह वर्ष में राजजात होने का वर्णन किया है। उत्तराखंड के विद्वान लेखकों ने भी नन्दा राजजात का विस्तारपूर्वक वर्णन किया हुआ है।

उत्तराखण्ड में 'राजजात' का शाब्दिक अर्थ राजराजेश्वरी देवी नन्दा की यात्रा से है। लोकमतानुसार नन्दा देवी को मायके से ससुराल तक भेजने यानि कैलाश शिखर तक विदा करने की परम्परा है, अतः देवी नन्दा की डोली को सजाकर वस्त्र आभूषणों एवं उपहारों से सुसज्जित करके बेटी को दुल्हन बनाकर हिमालय के कैलाश शिखर तक विदा किया जाता है। इस यात्रा की घोषणा प्रत्येक बारह वर्ष में बसंत पंचमी के शुभ मुहूर्त पर किया जाता है। इस राजजात यात्रा में देवी नन्दा का अगवान (मार्गदर्शक) आगे चलने वाला (चार सींग वाला मेंढा) चौसिंगा खाडू होता है। लोकमान्यतानुसार जब देवी नन्दा दोषोत्पत्ति होती है तो कांसुवागांव (जिला चमोली) के कुंवरों के यहां चार सींग वाला मेंढा (चौसिंग खाडू) जन्म लेता है, उसी वर्ष से राजजात की तैयारियां आरम्भ

हो जाती हैं। मान्यता है कि चौसिंगा खाडू (भेड़) पर्वतीय दुर्गम हिममण्डित टेढ़े–मेढ़े मार्गों पर चलने में समर्थ होता है। इसलिए खाडू को देवी की शक्ति का अंश मानते हुए राजजात में पथ–प्रदर्शक बनाया गया, नंदा देवी के मायके नौटी गांव से देवी के साथ अन्य देवी–देवताओं की डोलियां भी राजजात यात्रा में चलती हैं। आसपास के गाँव से रिंगाल की छतौलियां (बांस की छतरियां) सुसज्जित करके शामिल की जाती हैं। भाद्रपद की अष्टमी के शुभ मुहूर्त पर राजजात नौटी गांव स्थित मंदिर से विधिवत् पूजा–अर्चना करके आरंभ की जाती है। नन्दा देवी की डोली मार्ग में पड़ने वाले समस्त गांवों से होकर आगे बढ़ायी जाती है। सभी गांववासी देवी नन्दा की पूजा–अर्चना करके वस्त्र, आभूषण (सोने या चांदी के बने छत्र) एवं मक्का, ककड़ी तथा अनाज आदि भेंट स्वरूप देकर बड़ी भावुकता के साथ बेटी की तरह देवी नन्दा की डोली को अश्रुपूरित विदाई करते रहते हैं। इस प्रकार नन्दा देवी की डोली अनेक पड़ावों से होकर आगे बढ़ायी जाती है। सर्वप्रथम पड़ाव ईड़ा बधाणी में है। जहां के बारे में कहा जाता है कि नन्दा देवी ने गांव के मुखिया को वचन दिया था कि जब वह मायके से ससुराल जायेगी तो यहां पर पूजा अवश्य लेगी इसलिए पहले पड़ाव ईड़ा बधाणी में देवी की डोली पर श्रृंगार सामग्री एवं स्नेह स्वरूप भेंट चढ़ाकर विदाई दी जाती है। रात्रि विश्राम करने के पश्चात् देवी की डोली को वापस नौटी गांव में लाया जाता है, जहां पर नौटियाल जाति के ब्राह्मण देवी नन्दा की छतौली की अगवानी एवं पूजा करते हैं तथा महिलाओं द्वारा देवी के स्वागत में मांगल गीत गाए जाते हैं, ढोल दमाऊ, गाजे–बाजे के साथ देवी नन्दा की विदाई के करूण गीत गांव की महिलाओं, बेटियों के द्वारा गाए जाते हैं। भाव विभोर मुद्रा में महिलाएं अपने मधुर कंठों से इस प्रकार गीत गाती हैं कि –

जा ब्वे तू कैलाश, त्वे थै दयूँलू मी मुंगरी, काखड़ी,
जख म्वारी नी रिंगदी, कन कै की रैली तू वे कैलाश,
जा ब्वे तू कैलाश – – – –।

बेटी तू कैलाश जा, मैं तुझे कलेवा, ककड़ी, मुंगरी (मक्का) आदि दूंगी, जिस कैलाश शिखर पर मधुमक्खी तक नहीं मंडराती है, तू उस निर्जन, एकान्त कैलाश में कैसे रहेगी।

उक्त भावपूर्ण गीतों को गाती हुई बहू, बेटियां देवी नन्दा को कैलाश शिखर की ओर विदाई देती हैं। तीसरा पड़ाव नौटी से आगे कांसुआ गांव में होता है। यहां रात्रि मे मेला लगता है तथा महादेव घाट पर देवी की पूजा होती है। जगह–जगह से छतौलियां आकर सर्वप्रथम मिलन महादेव घाट पर ही होता है। प्रातः देवी की डोली एवं छतौलियां पूजा–अर्चना के पश्चात अग्रिम पड़ाव 'सेम' की ओर विदा की जाती है।

चौथे पड़ाव 'सेम' से होते हुए चांदपुरगढ़ी में होता है। यहाँ पर विशाल जन समुदाय देवी नन्दा के गीत गाता है, चांदपुर गढ़ी में स्वयं टिहरी राजपरिवार के नरेशों द्वारा देवी की विधिवत् पूजा–अर्चना की जाती है। सेम पड़ाव में चमोला, गैरोली चूलाकोट की छतौलियों का मिलन होता है। राजजात यात्रा चांदपुर गढ़ी से तोप सेम, भगोती, मींग, थराली, नन्दकेशरी, देवाल मुंदोली से आगे वाण गांव पहुंचती है। अन्तिम गांव वाण में विशालकाय देवदार के वृक्षों के बीच में लाटू देवता का मन्दिर है। लाटू देवता नन्दा देवी का भारवाहक तथा पथ प्रदर्शक था। केवल राजजात के दिन ही लाटू देवता का मंदिर देवी से मिलने के लिए खोला जाता है। नंदा को लाटू देवता की बहिन के रूप में माना जाता है। वाण से लाटू देवता का निषाण (प्रतीक) राजजात में आगे अन्तिम पड़ाव होमकुण्ड तक चलता है। वाण गांव से आगे नियमानुसार प्रथम स्थान पर आगे चार सिगां खाडू, दूसरे स्थान पर लाटू देवता का निषाण, तीसरे स्थान पर नौटी की छतौली, चौथे स्थान पर रिंगाल की छतौलियां एवं देवी–देवताओं की छतौलियां अन्तिम स्थान पर भोजपत्र की छतौलियां चलती हैं। चौसिंगा खाडू यहाँ से यात्रा का स्वयं आगे–आगे चलकर नेतृत्व करता है।

पौराणिक मान्यतानुसार यहां से आगे 'रिणकी धार' से बच्चे, स्त्रियों एवं चमड़े की वस्तुएं आदि को यात्रा में ले जाना निषेध है। यहाँ से आगे 'जौलमगरा' स्थान है, मान्यता है कि इस स्थान पर बहने वाली दो जलधाराओं में शिव पार्वती ने स्नान किया था। इस स्थान पर देवदार, बांज, बुरांश के हरे–भरे जंगल हैं। यहाँ से आगे चौदहवां पड़ाव 'पातर नचौनी' पहुचने के लिए वेदिनी बुग्याल पड़ता है, मान्यता है कि यहाँ पर वेदों की रचना हुई थी। इसलिए इस स्थान को 'वेदिनी' कहा गया। वेदिनी में नन्दा देवी का मंदिर है। इस स्थान पर खिलने वाले ब्रहमकमलों से देवी का अभिषेक किया जाता है। इसी स्थान पर मध्य में वेदिनी कुण्ड है, लोग यहाँ पर तर्पण एवं यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराते हैं। इस कुण्ड में एक ओर ठण्डा तथा दूसरी ओर गरम जल है। वेदिनी में ही शिव पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ था, ऐसी मान्यता भी है। यहीं पर पातर नचौनियाँ स्थान भी है। किंवदन्ति के अनुसार 14 वीं सदी में कन्नौज के राजा यशधवल ने राजजात का आयोजन किया। राजा यशधवल ने अपनी गढ़वाली रानी बल्लभा, पुत्र जड़ील एवं पुत्री जड़ीली को लेकर सैनिकों एवं नर्तकियों को भी साथ लाकर राजजात के लिए निकल आया। उस समय रानी बल्लभा गर्भवती थी, राजा दल–बल के साथ हरिद्वार मार्ग से होता हुआ वाणगांव तक सकुशल पहुंच गया, लेकिन रिणकीधार जहां से बच्चों स्त्रियों एवं अशुद्ध वस्तुओं का प्रवेश वर्जित है। रात्रि में राजा ने यहां पर नर्तकियों के नाच–गाने का आयोजन करवाया जिससे देवी नन्दा रूष्ट हुई और श्राप से सारी नर्तकीयां पत्थर (शिलाएं) बन गयी, तब से यह रिणकी धार "पातर नचौनियां" नाम से जानी जाने लगी। अग्रिम पड़ाव शीला समुद्र है। पातर नचौनियां से आगे कठिन चढ़ाई आरंभ हो जाती है। लगभग 04 कि.मी. की चड़ाई चढ़ने के बाद 'कैला विनायक' स्थान आता है यहां पर श्री गणेश जी की प्रतिमाएं चतुर्भुजी त्रिनेत्रधारी, एकदन्त, ललितासन अवस्था में बैठे हुई हैं। सभी राजजात में शामिल व्यक्ति इस स्थान पर श्री गणेश जी की पूजा करके आगे बढ़ते हैं। शीला समुद्र के निकट रूप कुण्ड है जहां पर विशाल नर कंकाल हजारों की संख्या में इधर–उधर बिखरे पड़े हैं।

किंवदन्ति है कि जब राजा यशधवल की गर्भवती रानी बल्लभा को प्रसूति वेदना हुई थी तो उसने यही समीप स्थित 'गंगतोली गुफा' में कन्या को जन्म दिया था। प्रसूति हो जाने से सारा क्षेत्र अशुद्ध हो गया, और देवी नन्दा ने रूष्ट होकर रात्रि में शिला वृष्टि कर दी जिससे रात्रि के समय में विश्राम कर रही राजा यशधवल की सेना एवं कर्मचारी सभी देवी के प्रकोप से यही दब गए, अतः शिलाओं की अत्यधिक वृष्टि होने से यह स्थान 'शीला समुद्र' कहा जाने लगा तथा जहाँ पर रानी बल्लभा ने कन्या को जन्म दिया था उस स्थान को आज 'बल्लभा स्वेलड़ा' कहा जाता है, अतः मान्यतानुसार आज भी देवी नन्दा की राजजात में शीला समुद्र से बच्चों एवं स्त्रियों तथा अशुद्ध वस्तुएं ले जाना वर्जित है। अन्तिम पड़ाव नन्दा घुंघटी एवं त्रिशूल पर्वत के मध्य 'होम कुण्ड' स्थित है इसी स्थान पर नन्दा देवी की अन्तिम पूजा अर्चना की जाती है। इस स्थान पर चौसिंगियां खाडू की पीठ पर रखे थैले में जिसे 'खेरूआ फांचर' कहा जाता है। देवी के निर्मित आभूषण, भेंट, अनाज आदि उपहार रखे जाते हैं, सभी यात्री चौसिंगा खाडू के पांव छूकर उसे नन्दा घुंघटी पर्वत शिखर की ओर विदा कर देते हैं। लगभग 280 कि.मी. की लम्बी पद यात्रा करने के बाद चौसिंगियां खाडू राजजात यात्रियों से अलग होकर अकेले अपने अदृश्य गंतव्य की ओर चला जाता है और हिममण्डित शिखरों के बीच अर्न्तध्यान हो जाता है। लोगों की मान्यता है कि चौसिंगा खाडू की पीठ पर चढ़ाएं गए उपहारों को देवी नन्दा स्वीकार कर देती है। सभी राजजात यात्री वापस नौटी गांव पहुंचते हैं। जहां पर यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात् इस वृहद एवं अद्भूत आयोजन को सम्पन्न किया जाता है। सभी यात्री देवी नन्दा के आर्शीवाद को प्राप्त करके अपने गंतव्य की ओर रवाना हो जाते हैं। पुनः इसी कामना के साथ कि सदियों से चली आ रही यह राजजात यात्रा युगों–युगों तक हिन्दुओं की धार्मिक आस्था को जीवंत बनाए रखे। पुनः मंगल कामनाओं के साथ आगामी वर्ष 2014 में होने वाली राजजात यात्रा में अधिक से अधिक श्रद्धालु भक्तजन शक्ति स्वरूपा देवी नन्दा के इस वृहद् धार्मिक अनुष्ठान में सम्मिलित होकर इच्छित पुण्यफल प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बनाएं।

– जय माँ नन्दा भगवती –

संदर्भ

1. लेख – कल्याण सिंह रावत मैती – श्रद्धा एवं स्नेह का प्रतीक ''नन्दा राजजात'' से।
2. उत्तराखंड वार्षिकी – 2012 से।